देश को महान बनाना है

एक अध्यापक कक्षा में पढ़ा रहे थे,
गणित के पीरियड में सवाल बता रहे थे।
सवाल बताते हुये जोर से बोले,
पांच के दूने बारह हुए।
मास्टर के ये शब्द, देश को महान बनाना है
राउन्ड लगाते हुए प्रिंसिपल के कान में एन्टर हुए।

प्रिंसिपल कमरे में आये,
फिर जोर से गुर्राये।
पांच के दूने दस के स्थान पर,
बारह क्यों बताते हो।
इन भोले भाले बालकों को,
बेवकूफ क्यों बनाते हो।

प्रिंसिपल की बात सुन,
मास्टर जी मुस्कराने लगे।
छोटी-छोटी अंगुलियों से,
गंजे सिर को खुजाने लगे।
फिर लाल-लाल जीभ को,
होठों पर घुमाया।
और प्रिंसिपल के कान में,
हौले से फुसफुसाया।

आप आज भी वहीं के वहीं पड़े हैं,
देश की प्रगति में बाधा बने खड़े हैं।
बचपन में जो पढ़ा उसी को पढ़ाते हैं,
नया कुछ सोच नहीं पाते हैं।
जरा सोचिये हमने जो पढ़ा वहीं पढ़ायेंगे,
तो हमारे छात्र प्रगति की दौड़ में पीछे रह जायेंगे।
इन्हें तो आगे चल कर केवल अंकों से खेलना है।
साक्षरता, रोजगार और उत्थान जैसे शब्दों के आगे,
बड़ी-बड़ी संख्याओं को भरना है।
इस तरह समस्याओं ही समस्याओं से घिरे इस देश को,
कागज़ों से महान करना है।

अनिल कुमार लोहनी, वैज्ञानिक 'ब'
गंगा मैदानीय क्षेत्रीय केन्द्र, पटना